आदान श्रृंखला–1

सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती

प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना
हिमाचल सरकार

जीवामृत एवं सप्तधान्यांकुर

–निर्माण एवं उपयोग

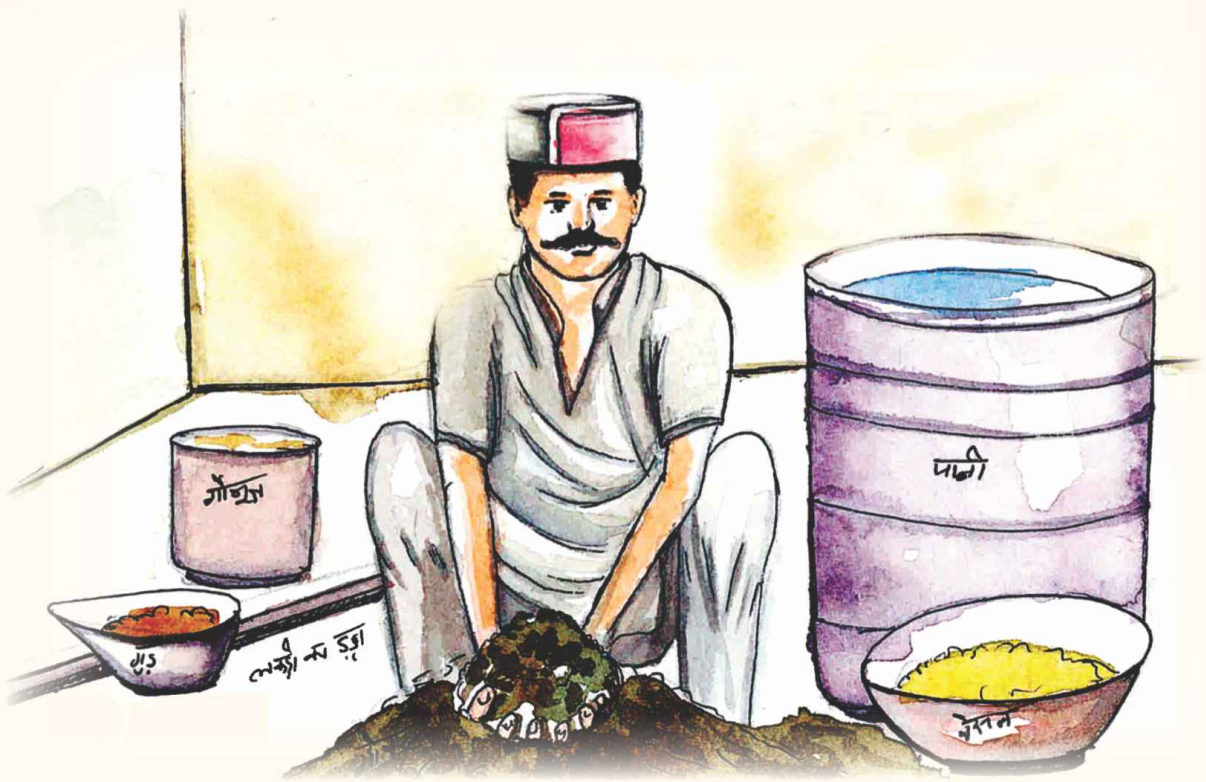

राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई
कृषि भवन, शिमला-5 (हि.प्र.)

सिद्धान्त एवं तकनीक विकास

पद्मश्री श्री सुभाष पालेकर

संकलन एवं संपादन

डॉ० राजेश्वर सिंह चंदेल
कार्यकारी निदेशक

रोहित सिंह पराशर
सहायक जनसंपर्क अधिकारी

इस पुस्तिका में उद्धृत विषय-वस्तु पदमश्री श्री सुभाष पालेकर जी द्वारा विकसित प्राकृतिक खेती विधि के लिए आवश्यक एक घटक ***जीवामृत एवं सप्तधान्यांकुर-निर्माण एवं उपयोग*** *का वर्णन श्री सुभाष पालेकर द्वारा अनुमोदित दिशा-निर्देश एवं सामग्री मात्रा के अनुसार दिया गया है। इस प्राकृतिक खेती विधि द्वारा हिमाचल प्रदेश के विभिन्न स्थानों पर खड़े किए गए कुछ उत्कृष्ट मॉडल के अनुभव के आधार पर कुछ अन्य सम्बधित बिन्दुओं का भी इसमें समावेश किया गया है।*

सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती
प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना

राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई
कृषि भवन, शिमला-5 (हि.प्र.)
दूरभाषः 0177 2832412
ई-मेल : spnf_hp@gov.in, वेबसाईट : spnfhp.nic.in

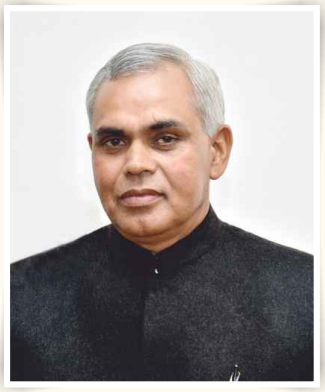

सत्यमेव जयते

राज्यपाल
हिमाचल प्रदेश
राजभवन, शिमला-171001

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि किसानों-बागवानों की सुविधा के लिए प्राकृतिक कृषि के लिए उपयोग में आने वाले विभिन्न आदानों को बनाने की विधियों को सरल व व्यावहारिक तौर पर प्रस्तुत करने के लिए नियम संग्रह पुस्तकों का प्रकाशन किया जा रहा है।

पद्मश्री श्री सुभाष पालेकर द्वारा विकसित प्राकृतिक खेती हिमाचल प्रदेश में एक आंदोलन का रुप ले चुकी है। प्रदेश सरकार के सहयोग से इस प्राकृतिक खेती के प्रसार के लिए कृषि विभाग, प्रदेश के कृषि व बागवानी विश्वविद्यालयों के साथ मिलकर एक प्रभावी कार्य योजना पर कार्य कर रहे हैं। प्राकृतिक कृषि के लिए गठित 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' ने बड़े स्तर पर प्रशिक्षण कार्य आरम्भ किए हैं, जिसका परिणाम है कि अभी तक प्रदेश में लगभग 3000 किसानों ने इस पर पूर्ण रुप से कार्य आरम्भ कर दिया है। यह प्रसन्नता की बात है कि आज प्रदेश में हर बड़े कार्यक्रम, पारम्परिक मेलों, किसान मेलों व अन्य सरकारी कार्यक्रमों में प्राकृतिक खेती की तकनीक व उत्पाद प्रदर्शित हो रहे हैं।

कृषि क्षेत्र में देश और प्रदेश को आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्राकृतिक खेती सबसे बेहतर विकल्प है। इस खेती पद्धति को अपनाने से किसानों के उत्पादन की लागत कम होकर आय कई गुणा बढ़ेगी। यह नितांत जरुरी है कि 'जहरमुक्त व पोषणयुक्त खाद्यान' के लिए व्यापक स्तर प्राकृतिक खेती को ही अपनाया जाए। हम सबकी यह कोशिश रहनी चाहिए की हर किसान-बागवान बंधु इससे जुड़ें और इस बारे में जागरुकता फैले ताकि अधिक से अधिक किसान इस पद्धति को अपनाएं।

मुझे विश्वास है कि यह पुस्तकें, जो किसानों के साथ सरल संवाद के रुप में तैयार की गई हैं और जिसमें प्राकृतिक कृषि से सम्बंधित विभिन्न सामग्री जैसे घनजीवामृत, बीजामृत, जीवामृत इत्यादि कैसे तैयार की जा सकती है, के बारे में दी गई जानकारी लाभदायक सिद्ध होगी। यह पुस्तकें सभी किसानों-बागवानों को इस दिशा में प्रेरित करेंगी।

इन पुस्तकों के सफल प्रकाशन के लिए लेखकों को हार्दिक शुभकामनाएं।

-आचार्य देवव्रत

मुख्यमन्त्री
हिमाचल प्रदेश
शिमला-171002

संदेश

परम्परागत खेती बनाम रासायनिक खेती के गुण-दोषों पर एक सार्थक बहस आज देश-प्रदेश में गम्भीरता से हो रही है। कृषि आज भी हमारी अर्थव्यवस्था की रीढ़ है तथा प्राचीनकाल से ही खेती करना उत्तम व्यवसाय माना जाता रहा है। शायद इसलिए कि इसमें किसान की आत्मनिर्भरता के साथ-साथ स्वायत्ता भी है। यह मानव उपयोग के लिए पौधों और जानवरों के विकास का प्रबंधन करने की एक कला है। 1960 के दशक के बाद देश में आई हरित क्रांति ने भारतीय कृषि की भविष्य की दिशा को तय किया। इस वैज्ञानिक खेती से खेत में मंहगे बीज, खाद, कीटनाशक तथा बड़े-बड़े औजारों का प्रयोग हुआ। इससे खेती मंहगी होती गई। पहले उपज बढ़ी, फिर स्थिर हुई तत्पश्चात्-घटना प्रारम्भ हो गई। कृषि ऋण इसी कृषि पद्धति की उत्पत्ति है।

माननीय प्रधानमंत्री जी का 2022 तक किसान की आय दोगुनी करने का लक्ष्य हम सबके सामने है। हिमाचल प्रदेश के किसान की खेती लागत कम हो, हमारा पर्यावरण स्वच्छ तथा किसान की आय दोगुनी हो, इस हेतू सरकार ने अपनी पहली बजट घोषणा में 'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान' योजना का शुभारम्भ करके, 25 करोड़ का बजट में प्रावधान रखा ताकि क्रमबद्ध तरीके तथा लक्ष्य से प्रदेश का किसान 'पद्मश्री सुभाष पालेकर' द्वारा विकसित 'प्राकृतिक खेती' को अपनाए। इस हेतू 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' कृषि विभाग के साथ पूरी तन्मयता से मेहनत कर रही है। हमारी सरकार इस योजना की लगातार निगरानी कर रही है।

पालेकर जी द्वारा सुझाऐ गए आदानों को तैयार करने के लिए बनाई गई यह छोटी-छोटी पुस्तिकाएं आसान भाषा में किसानों के लिए घर-द्वार पर ही मार्गदर्शिका की भूमिका अदा करेंगी। मैं लेखकों के इस प्रयास की सराहना करता हूँ।

-जयराम ठाकुर

कृषि, जनजातीय विकास
एवं सूचना–प्रौद्योगिकी मन्त्री
हिमाचल प्रदेश
शिमला–171002

संदेश

खेती में विभिन्न रासायनों का प्रयोग, फसल उत्पादन एवं उत्पादकता बढाने हेतू प्रारम्भ हुआ था। फसल उत्पादन के समय विपरीत मौसम, भूमि की पौष्टिक तत्वों के लिए अधिक मांग व कीट–बीमारियों की रोकथाम कर अधिक उत्पादन लेना इस कृषि पद्धति का मूल उद्देश्य था। लेकिन धीरे–धीरे फसल उत्पादन का गिरना, पानी का प्रदूषण, भूमि का अम्लीकरण, भूमि में उपलब्ध खनिजों में कमी, कीट–बिमारियों में आ रही लगातार प्रतिरोधक क्षमता, नए कीट–बीमारियों का उद्भव इत्यादि इसके नकारात्मक परिणाम अब सामने आ रहे हैं। कीटनाशकों के प्रयोग से इसका उदिष्ट लाभ अल्पकालिक है, वहीं इनका दुष्प्रभाव वातावरण, जमीन एवं जल निकायों में लंबे समय तक रहना शुरू हुआ। आज कहावत है कि 'थोड़ा अच्छा है पर थोड़ा अधिक और अच्छा है' के अनुसार खाद–कीटनाशकों का अन्धाधुन्ध प्रयोग मानव एवं अन्य उपलब्ध जीवन के नाश का कारण बनता जा रहा है।

प्रदेश सरकार ने 'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान' योजना के अंतर्गत सुभाष पालेकर जी द्वारा विकसित प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देकर प्रदेश को जहरमुक्त बनाने की एक पहल की है। प्राकृतिक खेती की इस विधि को प्रदेश में लागू करने हेतु माननीय मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में एक 'शीर्ष समिति' का गठन हुआ है तथा 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' प्रदेश में इस कार्य को पूरी लगन के साथ कर रही है। समयबद्ध तरीके से 2022 तक प्रदेश के 9.61 लाख किसान परिवारों को इस प्राकृतिक खेती की ओर प्रेरित करने का लक्ष्य रखा गया है।

मुझे विश्वास है कि प्रदेश की टीम जिला के आत्मा परियोजना के अधिकारियों के सहयोग से अपने लक्ष्य को क्रमबद्ध तरीके से पूरा करने में सफल होगी। प्राकृतिक खेती में प्रयोग होने वाले विभिन्न घटकों को बनाने एवं प्रयोग की विधियों को सरल भाषा में उतारा गया है ताकि किसान–बागवान आसानी से समझ सकेंगे। निश्चित रूप से इस परियोजना की सफलता के लिए यह एक गम्भीर प्रयास है।

–डॉ० रामलाल मारकण्डा

प्रधान सचिव
कृषि एवं जनजातीय विकास
हिमाचल प्रदेश
शिमला–171002

संदेश

पदम्श्री श्री सुभाष पालेकर द्वारा विकसित प्राकृतिक खेती, भूमि की उर्वरता एवं जैविक मात्रा में वृद्धि कर तथा फसलों एवं फल–सब्जियों में कीट–पतंगो एवं बीमारियों की रोकथाम करके किसानों की आर्थिकी में बदलाव लाने की क्षमता रखती है। हिमाचल जैसे पहाड़ी राज्य में लोगों के पास कम भूमि है तथा किसान अधिकतर देसी नस्ल के पशुओं का पालन करते हैं। हमारा प्रदेश, कृषि बागवानी में देश के अग्रणी राज्यों में से एक है, लेकिन प्रदेश में बढ़ते रासायनों के प्रयोग से खेती लागत का लगातार बढ़ना चिंता का विषय है।

प्रदेश सरकार ने किसानों की खेती लागत घटाने,जहरमुक्त फसल उगाने तथा आय को दोगुणा करने हेतू 'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान' नामक योजना का शुभारम्भ किया है। सुभाष पालेकर द्वारा विकसित प्राकृतिक खेती पद्धति, खेती लागत को कम कर तथा भूमि की उर्वरा शक्ति को बरकरार रखकर पहले ही वर्ष अधिक उत्पादन देने वाली विधि है। इस योजना के प्रसार एवं कार्यान्वयन हेतू गठित 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' द्वारा कृषि विभाग की आत्मा परियोजना के अधिकारियों के साथ से इस खेती विधि को किसानों तक ले जाया जा रहा है। किसानों के लिए प्रशिक्षण शिविर, प्रदेश के बाहर भ्रमण तथा छोटी–छोटी गोष्ठियों के माध्यम से आज लगभग 3000 उत्कृष्ठ मॉडल प्रदेश में खड़े हो चुके हैं। लेकिन रासायनिक खेती को छोड़कर प्राकृतिक खेती विधि अपनाने के लिए किसानों को प्रेरित करना अभी तक एक चुनौती है, क्योंकि वह वर्षों से खेती–बागवानी में रासायनों का प्रयोग कर रहे हैं।

ऐसी आदान मार्गदर्शिकाओं द्वारा किसान को अपने घर में ही हर समय प्राकृतिक खेती में आवश्यक सामग्रियों के निर्माण की जानकारी सरल भाषा में मिलती रहेगी। 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' का यह प्रयास इस दिशा में सराहनीय है।

–ओंकार शर्मा, भा०प्र०से०

प्रस्तावना

रासायनिक कृषि–बागवानी के दुष्प्रभाव दुनिया भर में देखे जा रहे हैं। इन रासायनों के अत्यधिक प्रयोग से जल–ज़मीन तो दूषित हुई ही है, विभिन्न वैज्ञानिक शोध, फल–सब्जियों द्वारा मनुष्य शरीर में रसायनों के प्रवेश और उनके स्वास्थ्य पर बुरे असर की भी पुष्टि करते हैं।

पर्यावरण के दूषित करने के अतिरिक्त रासायनिक खेती ने फ़सल उत्पादन की लागत को इतना बढ़ा दिया है कि, किसान या तो ऋण के बोझ में दब रहा है या कृषि छोड़ दूसरे रोजगार की तलाश में शहर की ओर रुख कर रहा है। रासायनिक खेती के लिए प्रस्तुत विकल्प, जैविक खेती भी एक मंहगा विकल्प है

पद्मश्री श्री सुभाष पालेकर द्वारा विकसित एवं प्रचारित 'प्राकृतिक खेती' इन कृषि समस्याओं हेतू एक सफल विकल्प बनकर उभरी है। श्री पालेकर जी के मार्गदर्शन में देशभर में लगभग 50 लाख किसान 'प्राकृतिक खेती' कर रहे हैं। हिमाचल प्रदेश के माननीय राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी ने इस विषय को लेकर किसानों को जागरूक करने के लिए पिछले 3 वर्षों से एक व्यापक अभियान छेड़ रखा है। गत् वर्ष हिमाचल प्रदेश सरकार ने 25 करोड़ के बजट के साथ 'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान' योजना का शुभारंभ कर 'प्राकृतिक खेती'को द्रुत गति प्रदान कर दी। प्रदेश में लगभग 17,800 किसानों को प्राकृतिक खेती के बारे में जागरूक किया जा चुका है। 1563 प्रशिक्षित किसानों के साथ विभिन्न फसलों पर 2547 मॉडल, प्रदेश के सभी जिलों में स्थापित हो चुके हैं।

इस खेती विधि में ज़हरमुक्त एवं अधिकतम फ़सल–फल उत्पादन हेतु कुछ विशेष घटक बनाने की विधियां श्री सुभाष पालेकर जी द्वारा विकसित की गई हैं। यह आसान एवं बहुत कम खर्चे में बनने वाले घटक हैं, जिन्हें हमारे आत्मा परियोजना के अधिकारी एवं प्रशिक्षित किसान सबको सीखा रहे हैं। इस परियोजना की 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई', शिमला द्वारा चित्र एवं वार्तालाप आधारित व्यावहारिक पुस्तिकाएं बनाई जा रही हैं, ताकि हर–एक घटक बनाने की विधि किसानों के पास आसानी से उपलब्ध हो।

आशा है यह व्यावहारिक पुस्तिकाएं, किसान–बागवानों के लिए घर में हर–समय उपस्थित मार्गदर्शिका की भूमिका अदा कर इस 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' अभियान को और गति प्रदान करेंगी।

–राकेश कंवर, भा०प्र०से०
निदेशक, ग्रामीण विकास विभाग
एवं राज्य परियोजना निदेशक
प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना (हि.प्र.)

सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती – संकल्पना

न्यूनतम लागत, अधिक उपज, उच्च गुणवत्ता, स्वस्थ पर्यावरण, जहर–रोग–कीट–प्राकृतिक संकट–कृषि कर्ज एव चिंता मुक्त के साथ–साथ किसान–बागवान को समृद्ध, खुशहाल एवं स्वावलम्बी बनाने वाली खेती ही–सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती है।

प्राकृतिक खेती, किसानों की खेती के लिए आवश्यक आदानों की बाजारी खरीद को एकदम से खत्म करती है। इस विधि की यह परिकल्पना है कि किसान सभी आवश्यक आदान घर या इसके आसपास उपलब्ध संसाधनों द्वारा ही बनाऐगा। इन सभी क्रियाओं को 'शून्य लागत प्राकृतिक खेती' नामकरण किया है जिसमें 'शून्य लागत' का अभिप्राय है कि फसल में आदान आवश्यकता हेतू बाजार से कुछ भी नहीं खरीदना।

प्राकृतिक खेती के संचालन के 4 चक्र

1. जीवामृत किसी भी भारतीय नस्ल की गाय के गोबर, मूत्र तथा अन्य स्थानीय उपलब्ध सामग्रियों जैसे गुड़, दाल का आटा तथा अदूषित या संजीव मिट्टी के मिश्रण से बनाया हुआ घोल, भूमि में सूक्ष्म जीवाणुओं की संख्या में बढ़ोतरी करता है। परम्परागत खेती से यह प्राकृतिक खेती भिन्न है क्योंकि इसमें गाय का गोबर और मूत्र, जैविक खाद के रूप में नहीं बल्कि, एक जैव–जामन के रूप में प्रयोग किया जाता है। यह जामन, भूमि में लाभदायक सूक्ष्म जीवाणुओं एवं स्थानीय केंचुओं की संख्या एवं गतिविधियों को सर्वश्रेष्ठ स्तर तक बढ़ाकर जमीन में पहले से अनुपलब्ध आवश्यक पौष्टिक तत्वों की पौधों को उपलब्धता सरल करता है। इससे पौधों की हानिकारक जीवाणुओं से सुरक्षा तथा भूमि में 'जैविक कार्बन' की मात्रा में बढ़ोतरी होती है।

2. बीजामृत देसी गाय के गोबर, मूत्र एवं बुझा चूना आधारित घटक से बीज एवं पौध पर सूक्ष्म जीवाणु आधारित लेप करके इनकी नई जड़ों को बीज या भूमि जनित रोगों से संरक्षित किया जाता है। बीजामृत प्रयोग से बीज की अंकुरण क्षमता में अप्रत्याशित वृद्धि देखी गई है।

3. आच्छादन भूमि में उपलब्ध नमी को सुरक्षित रखने हेतू इसकी उपरी सतह को किसी अन्य फसल या फसलों के अवशेष से ढ़क दिया जाता है। इस प्रक्रिया से 'ह्यूमस' की वृद्धि, भूमि की उपरी सतह का संरक्षण, भूमि में जल संग्रहण क्षमता, सूक्ष्म जीवाणुओं तथा पौधों के लिए आवश्यक पोषक तत्वों की मात्रा में बढ़ोतरी के साथ खरपतवार का भी नियंत्रण होता है।

4. वापसा (भूमि में वायु प्रवाह) यह वापसा भूमि में जीवामृत प्रयोग तथा आच्छादन का परिणाम है। जीवामृत के प्रयोग तथा आच्छादन करने से भूमि की सरंचना में सुधार होकर त्वरित गति से 'ह्यूमस' निर्माण होता है। इस से अन्ततः भूमि में अच्छे जल प्रबंध की प्रक्रिया आरम्भ होती है। फसल न तो अधिक वर्षा–तूफान में गिरती है और न ही सूखे की स्थिति में डगमगाती है।

प्राकृतिक खेती के 4 सिद्धांत

1. सह–फसल मुख्य फसल की कतारों के बीच ऐसी फसल लगाना जो भूमि में नत्रजन (नाइट्रोजन) की आपूर्ति तथा किसान को खेती लागत कीमत की प्रतिपूर्ति करें।

2. मेढ़ें तथा कतारें खेती के बीच कतारों में मेढ़ें तथा नालियां बनाई जाती हैं, जिनमें वर्षा का पानी संग्रहित होकर लंबे समय तक खेत में नमी की उपलब्धता बरकरार रखता है। लम्बे वर्षाकाल के समय यह नालियां तथा मेढ़ें खेतों में जमा हुए अधिक पानी की निकासी करने में मदद करती हैं।

3. स्थानीय केंचुओं की गतिविधियां इस खेती विधि द्वारा जमीन में स्थानीय पारिस्थितिकी का निर्माण होता है जिससे निद्रा में गए हुए स्थानीय केंचुओं की गतिविधियां बढ़ जाती हैं।

4. गोबर भारतीय नस्ल की किसी भी गाय का गोबर एवं मूत्र, इस कृषि पद्धति में उत्तम माना गया है। क्योंकि इसमें लाभदायक सूक्ष्म जीवाणुओं की संख्या दूसरे किसी भी पशु या गाय की अन्य प्रजातियों से कई गुणा अधिक होती है।

सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती का मूल सिद्धांत है कि वायु, पानी तथा जमीन में सभी आवश्यक पोषक तत्व प्रचूर मात्रा में उपलब्ध हैं। इसलिए फसल या पेड़-पौधों के लिए किसी भी बाहरी रासायनिक खादों की आवश्यकता नहीं है। यह प्राकृतिक खेती विधि, मित्र कीट-पतंगों की संख्या में वृद्धि एवं अनुकुल वातावरण का निर्माण कर फसलों को कीट-पतंगों एवं बिमारियों से सुरक्षित करती है। इस तरह किसी भी कीटनाशक या फफूंदनाशक की आवश्यकता को भी समाप्त कर देती है।

जीवामृत और घनजीवामृत का प्रयोग भूमि में सूक्ष्म जीवाणुओं तथा केंचुओं की गतिविधियों को बढ़ाता है। जिससे भूमि में बंद अवस्था में उपस्थित विभिन्न पौष्टिक तत्वों को उपलब्ध अवस्था में बदलकर समय-समय पर आवश्यकतानुसार पौधों को उपलब्ध करवाते हैं। इस तरह सूक्ष्म जीवाणुओं तथा स्थानीय केंचुओं की गतिविधियों की सक्रियता से भूमि की उर्वरा शक्ति हमेशा-हमेशा के लिए बनी रहती है।

हिमाचल प्रदेश में इस प्राकृतिक खेती के प्रचार, प्रशिक्षण एवं क्रियान्वयन हेतू एक व्यापक योजना से कार्य प्रारम्भ हो चुका है। माननीय राज्यपाल के मार्गदर्शन एवं मुख्यमंत्री जी की अध्यक्षता में एक सर्वोच्च समिति का गठन हुआ है। इस समिति के प्रबोधन में 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' कार्य कर रही है। कृषि विभाग के आत्मा परियोजना के अधिकारियों द्वारा जिला स्तर पर इस परियोजना का संचालन किया जा रहा है।

प्रतिवर्ष एक निश्चित लक्ष्य को लेते हुए सन् 2022 तक प्रदेश के सभी 9.61 लाख किसान परिवारों को इस खेती विधि से जोड़ना है। अभी तक प्रदेश के सभी जिलों के 80 विकास खण्डों में इस विधि द्वारा उत्कृष्ठ मॉडल खड़े कर किसानों को इनमें भ्रमण करवाया जा रहा है। चालू वर्ष में प्रदेश की सभी 3226 पंचायतों तक इस लक्ष्य को पहुँचाने का प्रयास किया जाएगा।

-डॉ० राजेश्वर सिंह चंदेल
कार्यकारी निदेशक
प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना (हि.प्र.)

जीवामृत

सामग्री आवश्यकता एवं निर्माण विधि

जीवामृत कोई खाद नहीं है। यह तो असंख्य सूक्ष्म जीवाणुओं का एक विशाल भंडार है। ये सूक्ष्म जीवाणु, जमीन में उपलब्ध आवश्यक पोषक तत्वों को पौधों के लिए उपलब्ध अवस्था में बदलकर इन्हें प्रयोग में लाने योग्य बनाते हैं। दूसरे शब्दों में ये सूक्ष्म जीवाणु भोजन बनाने का कार्य करते हैं। अतः **जीवामृत** अनंत करोड़ लाभकारी सूक्ष्म जीवाणुओं का सर्वोत्तम जामन है।

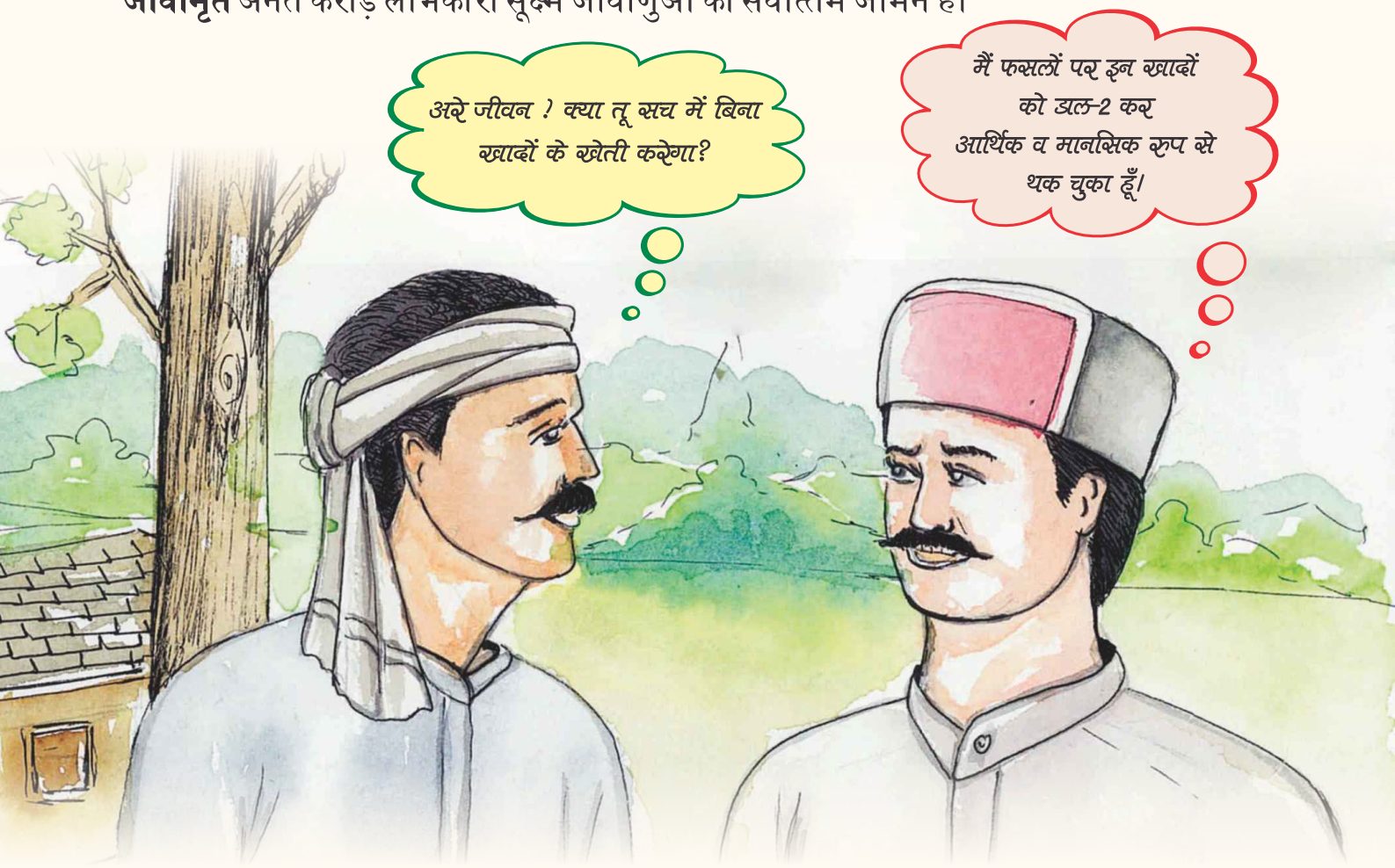

रमेशः ये मैं क्या सून रहा हूं जीवन ! तुमने खाद का प्रयोग बंद कर दिया ? अरे, ऐसे तो तू फसल बर्बाद कर देगा ?

जीवनः हां रमेश तूने ठीक ही सुना। मैं इन खादों को डाल-डालकर थक चुका हूं। साल दर साल इनके दाम बढ़ रहे हैं। मुझे लगता है कि यदि इन खादों की जरुरत और दाम ऐसे ही बढ़ते रहे तो लोगों को घर-परिवार का पेट पालना मुश्किल हो जाएगा। उपर से उत्पादन और घट रहा है।

रमेशः लगता है ये सब छोड़कर तूने खेती-बाड़ी बंद करने का सोच ही लिया है। खेत-खलिहान खाली हो गया तो परिवार कैसे पालेगा ?

जीवन: नहीं भाई खेती भी करूंगा, परिवार भी पालूंगा। और तो और, बाजार में अपने अनाज और सब्जी के अच्छे दाम लेकर परिवार को और खुशहाल बनाऊंगा।

रमेश: तू भाई क्या कह रहा है? पगला तो नहीं गया! या फिर किसी झाड़फूंक करने वाले ओझा ने कुछ पिला तो नहीं दिया? इन फसलों को अलग-अलग खादों की आदत हो गई है, इन्हें तो डालना पड़ेगा ही।

जीवन: न मैं पगला गया हूं और न ही किसी झाड़फूंक करने वाले ओझा के चक्करों में हूं, लेकिन अब मुझे खेती की जादुई छड़ी मिल गई है।

रमेश: अगर ऐसा सचमुच है तो मुझे भी बता ताकि मैं भी रोज-रोज के इस खाद के बढ़ते खर्च और घटती पैदावार की समस्या से छुटकारा पा सकुं।

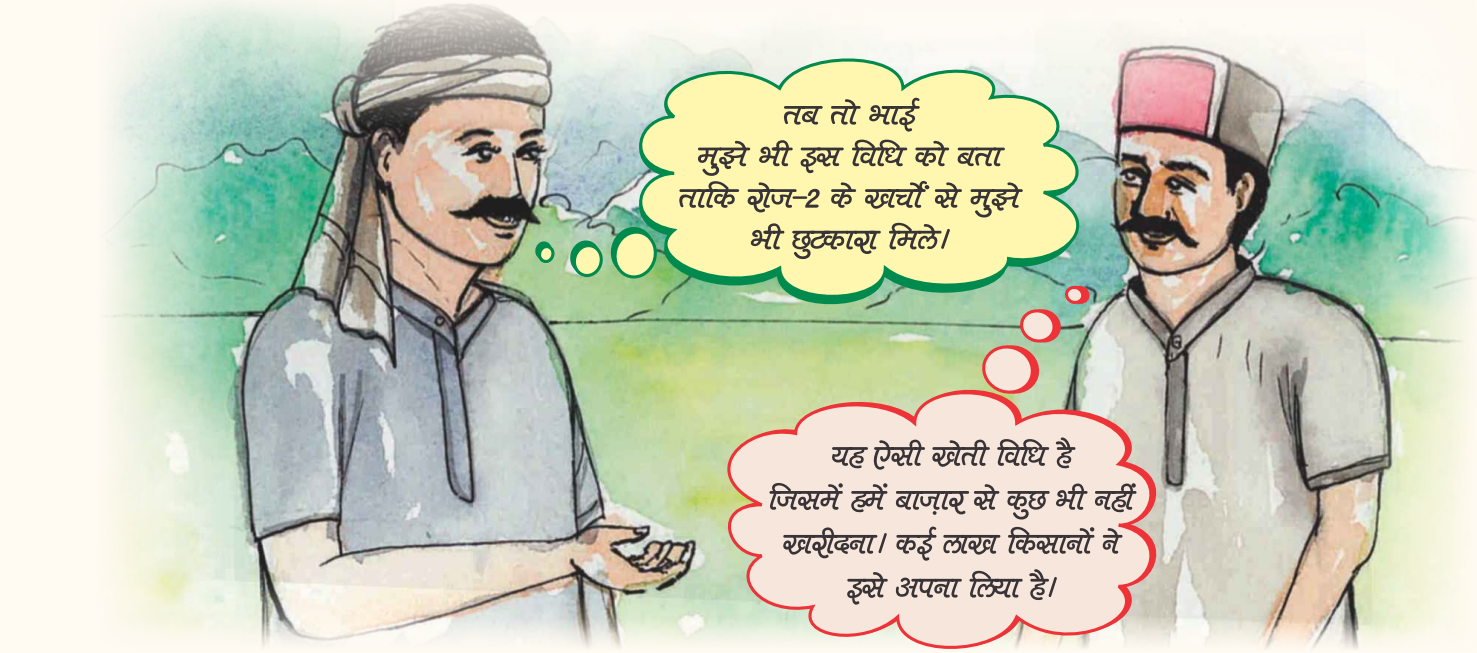

जीवन: तू भी दुखी है न? तो सुन! ये ओझा है **सुभाष पालेकर** जिनकी विधि खेती लागत को बहुत कम करवाकर फसल उत्पादन बढ़ाती है। लेकिन सुन! ये चिमटे-डंडे वाला ओझा न होकर

एक कृषि वैज्ञानिक है। जिन्होंने ऐसी पद्धति को देकर हमारे जैसे लाखों थके-हारे और निराश किसानों में एक नई आशा की किरण जगाई है। इस खेती पद्धति का नाम है **'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती'**।

रमेश: भाई मैं समझ गया। ये जैविक खेती है, जिसका राग तू मुझे सुनाएगा। तो सुन! तेरी कहानी शुरू हो, इससे पहले तुझे बता दूं कि इसे पिछले तीन साल से करके मैनें इसका शौक भी पूरा कर लिया है। इससे मेरा उत्पादन तो बढ़ा नहीं, खर्चा जरूर बढ़ गया। कीट-पतंगों और बिमारियों ने और आतंक मचाया, उपर से मार्केट की बात तो रही कोसों दूर।

जीवन: अरे इस निराशा से बाहर निकल और मेरी बात सुनता जा। न रासायनिक खेती और न ही जैविक खेती। अब उठ और चल मेरे खेत। मैं तुझे पालेकर जी की इस जादू की छड़ी **'प्राकृतिक खेती'** में प्रयोग होने वाले मुख्य घटक जीवामृत का कमाल दिखाता हूं। गौर से सुनता जा...

....तू बोलता है कि इन पहाड़ी ढ़लानों में गोबर ढ़ो-ढ़ो कर परिवार की पीठ दोहरी हो गई है-तो सुन इसमें नाम मात्र का गोबर ही लगेगा।

....तू बोलता है कि इतना गोबर कहां से लायें, पशु पालना मुश्किल हो गया है -तो इसमें एक गाय से 150 बीघा भूमि में खेती की जाती है।

....तू चाहता है कि फसलों का अच्छा रेट मिले- तो भईया जहरमुक्त फसल उगाएगा तो लोग दौड़े-दौड़े तेरे खेत पर ही खरीद के लिए आएंगे। आज कोई भी जहर वाला खाना नहीं खाना चाहता।

तो देख लिया ? कोई खर्चा नहीं, कोई तनाव नहीं और उपर से खुशहाल जिंदगी।

रमेश: ये तो सारा सुन लिया ! पर बता कि बिना खाद के उत्पादन कैसे होगा ?

जीवन: कम खर्चे और अच्छे उत्पादन के लिए ही तो तुझे ये सारी कहानी बताई। **जीवामृत** छिड़काव से उत्पादन अच्छा होगा और पहले से बेहतर होगा।

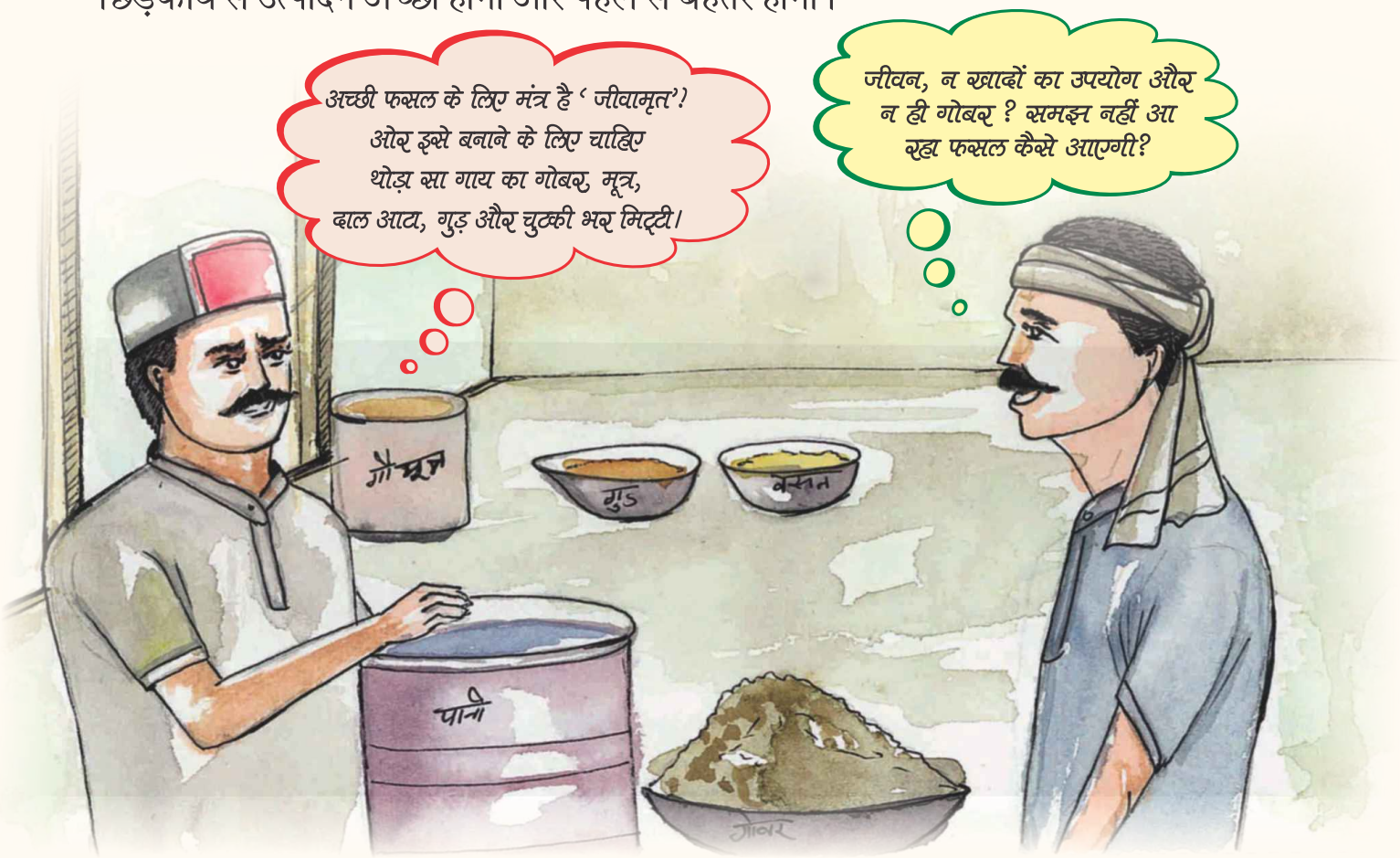

रमेश: तब तो सही है भाई, पर अब मुझे तेरा ज्यादा भाषण नहीं सुनना, मुझे इसे बनाने की विधि खेत में दिखा, ताकि कान से जो सुना उसे आंख से भी देखूं।

जीवन: चल तुझे अब ये विधि बताता हूँ। साथ ही जीवामृत बनाने की इस सामग्री को तुम कॉपी पर लिखते भी जाओ।

पानी	40 ली०
देसी गाय का मूत्र	2 ली०
देसी गाय का गोबर	2 कि०ग्रा०
गुड़	200 ग्रा०
बेसन	200 ग्रा०
पेड़ के तने के पास की मिट्टी	5 ग्रा० (एक चुटकी)

रमेश: हां मैनें लिख लिया। ये सारी चीजें तो मेरे घर में ही हैं। अब मुझे इसे तैयार करना भी बताओ।

जीवन: ये हुई न बात! आ तो अब गौशाला में चलकर इसे बनाते हैं। गौशाला के बरामदे में ही हम जीवामृत बनाएंगे, क्योंकि इसमें सीधी धूप या वर्षा का पानी नहीं पड़ना चाहिए। ये सारा सामान गौशाला के साथ वाले स्टोर में रखा है।

जीवामृत बनाने की तैयारी आरम्भ करने से पहले कुछ आवश्यक वस्तुओं का हमें प्रबन्ध करना पड़ेगा। जैसे:

1. ड्रम का चयन आवश्यकतानुसार करें। यदि भूमि अधिक हो (1 बीघा से ऊपर) तो 200 लीटर वाला, तथा कम (1 बीघा तक) हो तो 40 लीटर वाला ड्रम लें।
2. देसी गाय का गोबर, मूत्र, दाल का आटा, गुड़ तथा बड़े पेड़ के नीचे की मिट्टी आवश्यकतानुसार, तोल कर/पीस कर रख लें ।

इसके अतिरिक्त एक 4-5 फुट का लकडी का डण्डा, जूट की बोरी तथा रस्सी की व्यवस्था पहले कर लें ।

एक ड्रम में 40 लीटर पानी डालकर और फिर बारी-बारी से इसमें पहले देसी गाय का गोबर फिर गोमूत्र, गुड़, बेसन और मिट्टी को उपर दी गई तय मात्रा में डाल दें।

↓

लकड़ी के डंडे से इस सारी सामग्री को **घड़ी की सूई की दिशा** में 2-3 मिनट तक घोलें। बाद में इसे जूट की बोरी के साथ ढ़क दें।

↓

अब हम इस तैयार घोल को रोजाना 3 दिन तक सुबह-शाम 2-3 मिनट के लिए घड़ी की सुई की दिशा में घोलते रहेंगे।

↓

3 दिन के बाद तैयार जीवामृत को सूती कपड़े से छानकर किसी घड़े या ड्रम में भंडारण करें। यदि इसे ड्रीप या स्प्रींकलर विधि से प्रयोग करना है तो 2 बार छानकर रखें।

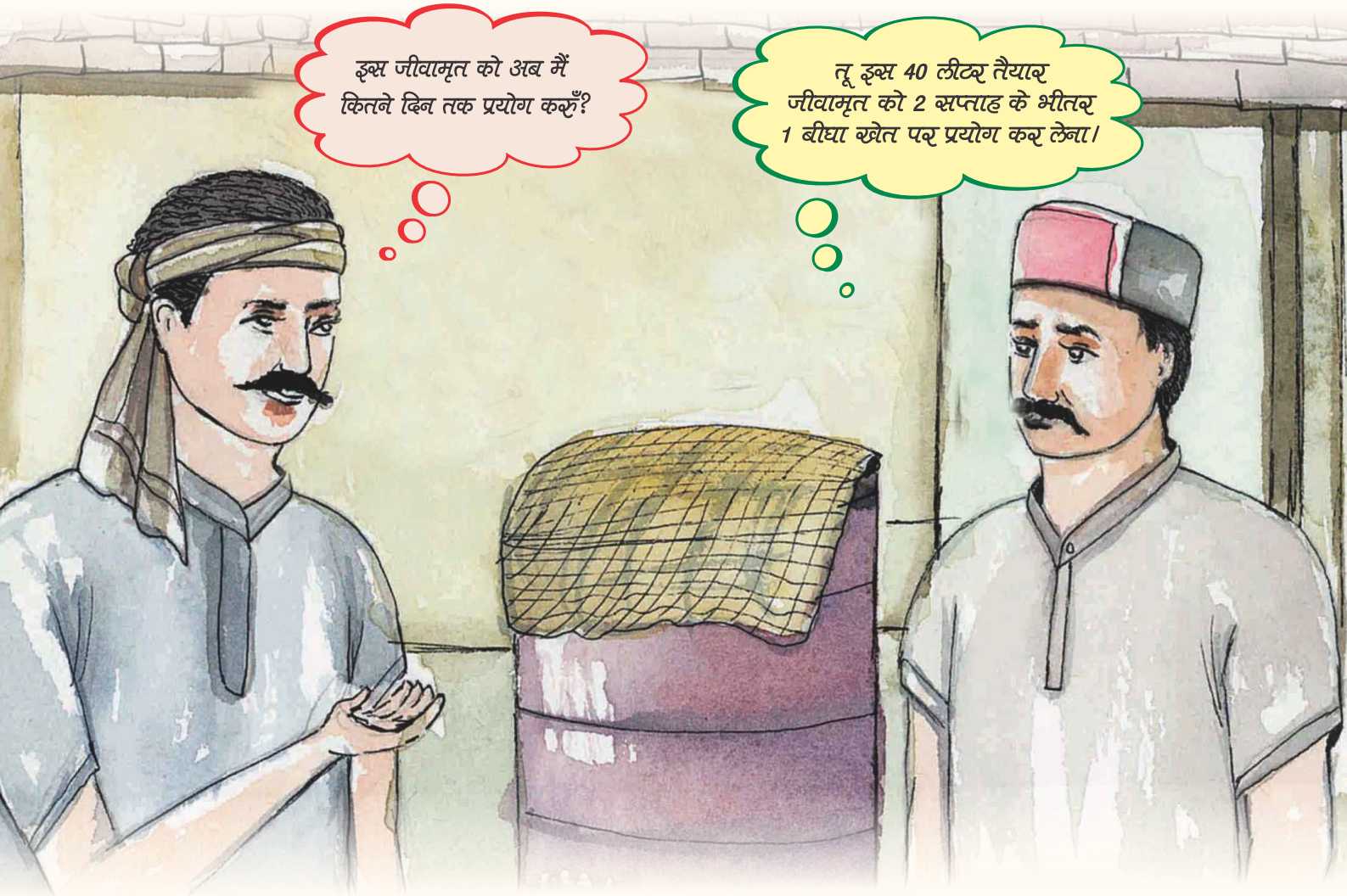

☞ इस तैयार जीवामृत को खेत में 2 सप्ताह तक प्रयोग कर सकते हैं।

- 40 लीटर जीवामृत को 1 बीघा जमीन पर छिड़काव करें या सिंचाई के पानी के साथ दें। बागवानी में 2 पौधों के बीच में नाली बनाकर भी तय मात्रा में इसे दिया जाता है।
- गुड़ के स्थान पर गन्ने का रस- 1 ली० **या** गन्ने के छोटे-छोटे टुकड़े- 2 कि०ग्रा० **या** मीठे फलों का गुद्दा-200 ग्रा० का भी प्रयोग किया जा सकता है।
- बेसन या किसी भी दाल (मूंगफली, सोयाबीन, मटर एंव उड़द को छोड़कर) का प्रयोग कर सकते हैं।
- गोबर और मूत्र केवल देसी गाय का ही होना चाहिए।
- गोबर जितना ताजा और मूत्र जितना पूराना उतना ही अच्छा।

- ध्यान रहे जीवामृत प्रदेश के अलग-अलग स्थानों में वहां के स्थानीय वातावरण के अनुसार तैयार होगा। इसके तैयार होने की प्रमुख पहचान है- घोल की सतह पर झाग बनना तथा एक अलग तरह की खूशबु का आना।
- गर्मियों में यह जीवामृत 3-6 दिनों में तथा सर्दियों में 7-14 दिनों में तैयार हो जाऐगा।

रमेश: मिट्टी तो मिट्टी होती है, तो बड़े पेड़ के नीचे की मिट्टी ही क्यों ?

जीवन: रमेश तूने ठीक प्रश्न पूछा। जब तक मन में आया प्रश्न नहीं पूछेगा तब तक इन्हें बनाने में तसल्ली नहीं होगी। बड़े पेड़ के नीचे सैकड़ों सालों से अदूषित मिट्टी पड़ी हुई होती है और इसमें करोड़ों सूक्ष्म जीवाणुओं की प्रजातियां निवास करती हैं। जब हम इस मिट्टी को लेते हैं तो उसमें असंख्य सूक्ष्म जीवाणुओं की सारी स्थानीय जैव विविधता आ जाती है। इससे जीवामृत में सूक्ष्म जीवाणुओं की संख्या एवं किस्में बढ़ जाती हैं।

सप्तधान्यांकुर

सामग्री आवश्यकता एवं निर्माण विधि

रमेश: भाई जीवन, एक बात बताओ ? मैनें राज कुमार, संजय, सुदर्शन और बबली को अपनी फसलों पर जीवामृत के अलावा भी कुछ और छिड़कते देखा है। वो बोलते हैं कि इस छिड़काव से पौधों में लगे फलों में बेहतर आकार, फल/दानों का भार बढ़ने के साथ दानों व फलों में अच्छा रंग और चमक आती है। क्या सचमुच इसके लिए भी कोई छिड़काव है ?

जीवन: हां भाई, पालेकर जी ने फल तथा दानों के अच्छे आकार, चमक तथा भंडारण क्षमता बढ़ाने के लिए भी एक मंत्र दिया है, जिसका नाम है **सप्तधान्यांकुर**। उन्होंने इसे, फल-पौध टॉनिक/प्रतिरक्षा कवच का नाम भी दिया है।

- सप्तधान्यांकुर अर्क का छिड़काव करने से दाने/फलों में चमक आती है, फल परिपक्व होते हैं, दाने ठोस भरते हैं, फल/दानों की भंडारण क्षमता बढ़ती है, स्वाद बढ़ता है, फल गिरना बंद हो जाते हैं और फल/दानों का भार बढ़ता है।

रमेश: तब तो यह भी समझना और लिखना पड़ेगा कि यह **सप्तधान्यांकुर** क्या होता है ? और इसे कैसे तैयार किया जाता है ? लगे हाथ इसके बारे में भी बता ही दो, ताकि मैं इसका भी प्रयोग कर सकूं।

जीवन: ठीक है, इसके बारे में भी तुम्हें बताता हूं। इसमें लगने वाली सामग्री और इसकी विधि को लिख लो, ताकि आसानी से तुम इसे अपने घर में तैयार कर सको।

एक छोटी कटोरी लें और इसमें तिल (काला तिल हो तो वो सबसे बेहतर) के 200 ग्राम साबुत दाने डाल दें। अब इसमें इतना पानी डालें की सारे तिल पानी में डूब जाएं। इसके बाद इसे घर के अंदर 24 घंटे के लिए रख दें।

दूसरे दिन सुबह, एक और बड़ा कटोरा लें। इसमें बारी-बारी से मूंग, उड़द, रौंगी (लोबिया), मसूर, गेहूं और चना के साबुत दाने 100-100 ग्राम के हिसाब से डालकर मिला दें। इसके बाद इस कटोरे में इतना पानी डालें कि सभी दाने पानी में डूब जाएं।

अगले दिन सातों प्रकार के भीगे दाने पानी से निकाल लें। उसके बाद इन सभी को एक गीले कपड़े में पोटली बनाकर अंकुरण के लिए घर के अंदर टांग दें। जिस पानी में सातों प्रकार के दाने भिगोए थे उसको सुरक्षित रखें।

जिस दिन पोटली में रखे दानों में से 1 सेंटीमीटर अंकुर बाहर निकल आएंगे, उस दिन उन्हें पोटली से निकालकर, सिल्ल-बट्टे में पीसकर इनकी चटनी बनाऐं।

अब एक ड्रम में 40 ली० पानी, 2 ली० गोमूत्र तथा दानों को भिगोने के बाद बचे हुए पानी को मिला दें। इसके बाद उंगलियों से सिल्ल-बट्टे में बनाई हुई चटनी को भी इसमें मिला दें। घोल को लकड़ी के डंडे से घड़ी की सूई की दिशा में 2-3 मिनट के लिए घुमाकर बोरी से ढ़क दें। इसे 2 घंटे छाया में रखने के बाद कपड़े से छानें।

रमेश: अरे वाह! इन दोनों घटकों को तैयार करने की सभी सामग्रियां घर पर ही तो मौजूद हैं। इसलिए इन्हें तैयार करने में कोई लागत नहीं आएगी। लेकिन एक बात बताओ कि मुझे अब इनका छिड़काव कब-कब करना चाहिए ?

जीवन: बिल्कुल ठीक कहा! जब तक इन बनाए हुए जीवामृत और सप्तधान्यांकुर अर्क के छिड़काव की जानकारी नहीं होगी तो बनाने का कोई फायदा नहीं। तो चल पकड़ पैन-कागज़ मैं तुझे इनके प्रयोग की विधियां लिखाता हूँ।

खेती तथा बागवानी फसलों पर जीवामृत छिड़काव सारणी

(प्रति 1 बीघा या प्रति 2 कनाल)

1.खेती फसलें (सब्जियों को छोड़कर)

पहली सारणी (4 छिड़काव)

बीज बोआई या पौध रोपाई के 1 मास उपरांत

पहला छिड़काव (20ली० पानी + 1ली० जीवामृत)

↓ 21 दिन बाद

दूसरा छिड़काव (30ली० पानी + 2ली० जीवामृत)

↓ 21 दिन बाद

तीसरा छिड़काव (40ली० पानी + 4ली० जीवामृत)

↓

चौथा छिड़काव-दानों की दुग्ध अवस्था पर (Pre milking stage)

(40ली० पानी+1ली० खट्टी लस्सी या 40ली० बिना पानी डाले सप्तधान्यांकुर अर्क)

दूसरी सारणी (6 छिड़काव)

बीज बोआई या पौध रोपाई के 1 मास उपरांत

पहला छिड़काव (20ली० पानी + 1ली० जीवामृत)

↓ 15 दिन बाद

दूसरा छिड़काव (30ली० पानी + 2ली० जीवामृत)

↓ 15 दिन बाद

तीसरा छिड़काव (30ली० पानी + 2ली० जीवामृत)

↓ 15 दिन बाद

चौथा छिड़काव (40ली० पानी + 5ली० जीवामृत)

↓ 15 दिन बाद

पांचवां छिड़काव (40ली०पानी + 4ली० जीवामृत)

↓ 15 दिन बाद

छठा छिड़काव-दानों की दुग्ध अवस्था पर (Pre milking stage)

(40ली० पानी+1ली० खट्टी लस्सी या 40ली० बिना पानी डाले सप्तधान्यांकुर अर्क)

सब्जियां

वर्षाकाल में सब्जियां लगाने के बाद मास में 2 बार अगर हो सके तो 1-1 कप जीवामृत 2 पौधों के बीच में भूमि की सतह में डालना है। अगर जीवामृत की उपलब्धता हो तो 40 ली० की जगह 80 ली० जीवामृत भी हर सिंचाई के पानी के साथ दे सकते हैं।

बीज बोआई/रोपाई के 1 मास के बाद

पहला छिड़काव (20 ली० पानी एवं 1 ली० कपड़े से छाना हुआ जीवामृत)

↓ 10 दिन बाद

दूसरा छिड़काव (20 ली० द्रेकास्त्र बिना पानी मिलाऐ)

↓ 10 दिन बाद

तीसरा छिड़काव (20 ली० पानी + 0.5 (आधा) ली० खट्टी लस्सी)

↓ 10 दिन बाद

चौथा छिड़काव (30 ली० पानी + 2 ली० जीवामृत)

↓ 10 दिन बाद

पांचवा छिड़काव (30 ली०पानी+1.25 ली० ब्रह्मास्त्र/30 ली०पानी+1.25 ली० अग्निस्त्र)

↓ 10 दिन बाद

छठा छिड़काव (30 ली० पानी+1 ली० खट्टी लस्सी)

↓ 10 दिन बाद

सातवां छिड़काव (40 ली० पानी + 4 ली० जीवामृत)

↓ 10 दिन बाद

आठवां छिड़काव (40 ली० पानी + 1.5 ली० अग्निअस्त्र)

↓ 10 दिन बाद

नौंवा एवं अंतिम छिड़काव (40 ली० सप्तधान्यांकुर बिना पानी मिलाऐ हुए)

2. बागवानी फसलें (प्रति पौधा भूमि सतह में डालना)

पौधा किस्म 1

इसमें वह फल-पौधे आते हैं जिनका रोपण 4 x 2½, 4½ x 4½, 6 x 4, 6 x 6, 8 x 6, 8 x 8, 9 x 4½, 9 x 9, 10 x 5, 10 x 10, 12 x 6, 12 x 9 और 12 x 12 फुट के अन्तराल पर होता है जैसे -चाय, सेब, पपीता, अनार, सीताफल, केला, बाकी सारे इन अन्तराल पर लिए जाने वाले फल-पौधे और झाड़ियों वाले पौधे आते हैं।

वर्ष	मात्रा
पहला वर्ष पहला 6 मास जीवामृत/पौधा	पौधों के रोपण के पहले 6 मास में 200 मि०ली० -मास में 2 बार। •पौधे को दोपहर 12 बजे जो छाया पड़ती है, उसकी सीमा पर **अथवा** 2 पौधों के बीच में भूमि की सतह पर डाल दें।
दूसरा 6 मास	500मि०ली० जीवामृत/पौधा - मास में 2 बार
दूसरा वर्ष	1ली० जीवामृत/पौधा - मास में 2 बार
तीसरा वर्ष	2ली० जीवामृत/पौधा - मास में 2 बार
चौथा वर्ष एवं आगे ....हर वर्ष	2ली० जीवामृत/पौधा - मास में 2 बार

पौधा किस्म 2

इसमें वह फल-पौधे आते हैं जिनका रोपण 15 x 15, 16 x 16, 16 x 12, 18 x 12, 18 x 18, 20 x 15, 20 x 20, 22 x 22, 24 x 18, 24 x 24 फुट पर किया जाता है जैसे- पलम, खुमानी, आड़ू, किवी फल, संतरा, मौसमी, निम्बू, आंवला, अमरूद, अंजीर और अन्य इस अन्तराल पर लगाऐ जाने वाले पेड़-पौधे।

वर्ष	मात्रा
पहला वर्ष पहला 6 मास	200मि०ली० जीवामृत/पौधा - मास में 2 बार
दूसरा 6 मास	500मि०ली०जीवामृत/पौधा - मास में 2 बार

दूसरा वर्ष	1ली0 जीवामृत/पौधा – मास में 2 बार
तीसरा वर्ष	2ली0 जीवामृत/पौधा – मास में 2 बार
चौथा वर्ष	3ली0 जीवामृत/पौधा – मास में 2 बार
पांचवा वर्ष	4ली0 जीवामृत/पौधा – मास में 2 बार
छठा वर्ष एवं आगे हर वर्ष	5ली0 जीवामृत/पौधा – मास में 2 बार

पौधा किस्म 3

इसमें वह बड़े फल–पौधे आते हैं जिनका रोपण 27 x 27, 30 x 30, 33 x 33, 36 x 24, 36 x 36, 40 x 30, 40 x 40, 44 x 44, 44 x 33, 48 x 36, 48 x 24, 48 x 48 फुट पर किया जाता है जैसे– आम, इमली, बादाम, जामुन, कटहल, देसी बेर, बेल इत्यादि।

वर्ष	मात्रा
पहला वर्ष	
पहला 6 मास	200 मि०ली० जीवामृत/पौधा – मास में 2 बार
दूसरा 6 मास	500 मि०ली० जीवामृत/ पौधा – मास में 2 बार
दूसरा वर्ष	1 ली० जीवामृत/पौधा–मास में 2 बार
तीसरा वर्ष	2 ली० जीवामृत/पौधा–मास में 2 बार
चौथा वर्ष	3 ली० जीवामृत/पौधा–मास में 2 बार
पांचवां वर्ष	4 ली० जीवामृत/पौधा–मास में 2 बार
छठा वर्ष/हर वर्ष	5 ली० जीवामृत/पौधा–मास में 2 बार
सातवां वर्ष	6 ली०जीवामृत/पौधा–मास में 2 बार
आठवां वर्ष	7 ली० जीवामृत/पौधा–मास में 2 बार
नौवां वर्ष	8 ली० जीवामृत/पौधा–मास में 2 बार
दसवां वर्ष	9 ली० जीवामृत/पौधा–मास में 2 बार
ग्यारहवां वर्ष एवं आगे.....हर वर्ष	10 ली० जीवामृत/पौधा–मास में 2 बार

जीवामृत (Application)

जो फल-पौधे जिस किस्म का है उस किस्म में उस आयु के अनुसार जितना जीवामृत डालने की बात की है उतना ही डालना है।

किस्म 1: पौधों को जितने वर्ष का पेड़ है उतना ही जीवामृत दें अधिक 2 ली० 2 साल के बाद 2 ली० जीवामृत/पौधा डालना है

किस्म 2: के पेड़-पौधे जिस आयु के हैं, उस आयु में जितनी मात्रा बताई गई है उतना ही जीवामृत डालना है। 3 साल के पौधे में 2 ली० जीवामृत, 4 के में 3 ली०, 5 के में 4 ली०, 6 के में 5 ली० और ..... आगे हर वर्ष 5 ली०/पौधा।

किस्म 3: के पौधे : 2 साल का 1 ली०, 3 साल का 2 ली०, 4 साल 3 ली०, 5 साल का 4 ली०, 6 साल 5 ली०, 7 साल का 6 ली०, 8 साल का 7 ली०, 9 साल का 8 ली०, 10 साल का 9 ली०, 11 साल एवं ..... आगे हर वर्ष में 10 ली०/पौधा जीवामृत दें।

जीवामृत प्रयोग की पद्धति

1. सिंचाई के पानी के साथ 2. दो पौधों के बीच में डालना 3. छिड़काव

फल तुड़ाई के बाद जीवामृत छिड़काव

फल तोड़ने के तुरन्त बाद 200 ली० पानी, 20 ली० कपड़े से छाना हुआ जीवामृत मिलाकर छिड़काव करें। फल टूटने की जगह से चिकना सा तरल पदार्थ निकलता है जिससे फफूंद पौधों पर सक्रिय होती है। फल तोड़ने के बाद पौधे को आघात के कारण सदमा लगता है। जीवामृत इसे इस सदमें से बाहर निकालता है।

फलदार पौधे (सुप्तावस्था बाद) *(प्रति 1 बीघा या 2 कनाल)*

नए पत्ते फूट कर आने के बाद उन का ताम्र वर्णीय रंग (लाल रंग जब हरे रंग में बदलेगा) आता है

पहला छिड़काव- 40 ली० पानी + 2 ली० जीवामृत (कपड़े से छाना हुआ)

↓ 21 दिन के बाद

दूसरा छिड़काव (40 ली० पानी + 3 ली० जीवामृत)

↓ 21 दिन बाद

तीसरा छिड़काव (40 ली० पानी + 4 ली० जीवामृत)

↓

अगला छिड़काव- **फल धारणा** (Fruit Setting) **के बाद के बाद**

21 दिन बाद

पहला छिड़काव (40 ली० पानी + 1 ली० जीवामृत)

21 दिन के बाद

दूसरा छिड़काव (40 ली० सप्तधान्यांकुर, बिना पानी मिलाऐं)

21 दिन के बाद

तीसरा छिड़काव (40 ली० पानी + 2 ली० जीवामृत)

21 दिन के बाद

चौथा छिड़काव (40 ली० सप्तधान्यांकुर, बिना पानी मिलाऐं)

21 दिन के बाद

पांचवां छिड़काव (40 ली० पानी + 3 ली० जीवामृत)

21 दिन के बाद

छठा (अंतिम) छिड़काव (40 ली० सप्तधान्यांकुर, बिना पानी मिलाऐं)

नये फलदार पौधे लगाने के बाद

नये पौधे लगाने के 1 मास बाद (पौधों एवं सह-फसलों पर छिड़काव)

पहला छिड़काव (20 ली0 पानी + 1 ली0 जीवामृत)

21 दिन बाद

दूसरा छिड़काव (30 ली० पानी + 2 ली० जीवामृत)

21 दिन बाद

तीसरा छिड़काव (40 ली० पानी + 4 ली० जीवामृत)

21 दिन बाद

चौथा छिड़काव (40 ली० पानी + 1 ली० खट्टी लस्सी)

1 मास के बाद

पांचवां छिड़काव (40 ली० पानी + 4 ली० जीवामृत)

इसके बाद हर मास फल धारणा होने तक (40 ली० पानी + 4 ली० जीवामृत) छिड़कते रहें।

- फल धारणा (Fruit Setting) के बाद पहले दी हुई 6 छिड़काव की सारणी को अमल में लाऐं।

➢ *वर्षा काल में जिस दिन वर्षा नहीं होगी उसी दिन छिड़काव करना है।*

रमेश: जीवन, तुम्हारा बहुत-बहुत धन्यवाद। तूने मुझे खेती का सही रास्ता ही नहीं बताया, बल्कि रास्ते पर चला भी दिया।

जीवन: भाई ऐसी बात नहीं। मैनें तो तुझे सीखा कर कोई बड़ा काम नहीं किया, बल्कि अपने लिए **सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती** करने वाला एक और साथी जोड़ लिया।

अब तू भी हमारे पहाड़ी प्रदेश को जहरमुक्त बनाने की ओर इस **सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती** आंदोलन से जुड़ गया है। तू केवल जहरमुक्त फसल ही नहीं उगाएगा बल्कि अपने को, अपने परिवार को और समाज को स्वस्थ बनाएगा। खेती का खर्चा घटेगा, आय बढ़ेगी, परिवार में खुशहाली आएगी। इसी से तो स्वस्थ वातावरण बनेगा। अब बताओ-बने न हम असल के अन्नदाता !

प्राकृतिक खेती कर रहे किसानों हेतू हिमाचल सरकार द्वारा दिए जा रहे उपदान

1. भारतीय नस्ल की गाय	₹ 25,000/ परिवार + ₹ 5000 यातायात खर्चा + ₹ 2000 कमेटी फीस
2. गौशाला का फर्श तथा गोमूत्र एकत्र करने हेतू गड्ढा	₹ 8,000/ परिवार
3. विभिन्न आदान बनाने एवं संग्रह हेतू ड्रम	₹ 2250/ परिवार
4. संसाधन भण्डार खोलने हेतू	₹ 10,000-50,000 तक /समूह या परिवार/पंचायत

अधिक जानकारी हेतू सम्पर्क करें

खण्ड स्तर पर: *खण्ड तकनीकी प्रबन्धन (BTM) एवं सहायक तकनीकी प्रबन्धन (ATM)*

जिला स्तर पर: *आत्मा परियोजना निदेशक, कृषि विभाग*

पद्मश्री श्री सुभाष पालेकर

देश–दुनिया को 'शून्य लागत प्राकृतिक खेती' पद्धति देने वाले कृषि वैज्ञानिक पदम्श्री श्री सुभाष पालेकर का जन्म महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र के गांव बेलोरा में सन् 1949 में हुआ। नागपुर से अपनी कृषि स्नातक की पढ़ाई पूरी करने के बाद 1972 से अपने पिता के साथ अपनी जमीन पर रासायनिक खेती आरम्भ कर दी। प्रकृति द्वारा रचित फल–पौधों की उत्पत्ति एवं विकास तथा रासायनिक खेती का द्वन्द, पालेकर जी को इस रहस्यमयी सत्य को जानने के लिए लगातार प्रेरित कर रहा था। 1972 से 1985 के बीच की गई रासायनिक खेती में इन्होंने पाया कि प्रारम्भिक दौर में फसल–वृद्धि हुई, लेकिन धीरे–धीरे इसमें स्थिरता आने लगी और अन्त्तोगत्व इसमें गिरावट आ गई।

रासायनिक खेती को पूरी तरह से वैज्ञानिक अनुमोदन के अनुसार करने पर भी उत्पादन का घटना, 'हरित क्रांति' के सत्य पर प्रश्न चिन्ह लगा रहा था। यहीं से उन्होंने इस रासायनिक खेती के व्यवहारिक विकल्प की तलाश आरंभ कर दी। महाविद्यालय पढ़ाई के दौरान इन्होंने झारखंड–छतीसगढ़ के जनजाति क्षेत्र में जगंलों का अध्ययन कर यह पाया कि प्रकृति में 'स्वयं पोषी तथा स्वयं विकासी' व्यवस्था कायम है। इसलिए बाहर से किसी भी आदान की आवश्यकता नहीं है। तत्पश्चात 12 वर्षों के सघन अभ्यास एव अनुसंधान के बाद उन्होंने एक विकल्प को सम्पूर्ण अनुमोदन के साथ देश के सम्मुख रखा। जिसका नाम है 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती'।

आप इस 'रसायन मुक्त तथा लागत रहित' खेती विकल्प को कार्यशाला, संगोष्ठी, स्वलिखित किताबों तथा देश में विभिन्न फसल–फलों पर खड़े किए गए उत्कृष्ट मॉडल के माध्यम से देश–विदेश में ले जा रहे हैं। आज देश भर में 50 लाख से अधिक किसान इस खेती को अपना चुके हैं। हिमाचल प्रदेश, आंध्रप्रदेश तथा कर्नाटक प्रदेश में राज्य सरकारों ने इस प्राकृतिक खेती अभियान को आगे बढ़ाने का बीड़ा उठाया है। इसके अतिरिक्त, अन्य प्रदेशों में भी यह एक विशाल सामाजिक आंदोलन का रूप ले चुका है। आपने अभी तक लगभग 154 अनुसंधान परियोजनाओं में काम करते हुए इस पद्धति पर 30 से अधिक पुस्तकें, देश की विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित की हैं। भारतवर्ष के नीति आयोग ने अपने दृष्टि पत्र में इस खेती को किसान की आय दोगुनी करने के लिए एक सशक्त विकल्प माना है। भारत सरकार की ओर से उन्हें वर्ष 2016 का देश का चौथा सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार 'पद्मश्री' से सम्मानित किया गया है। इसके अतिरिक्त पालेकर जी को कई राज्यों और नामी संस्थाओं की ओर से भी अन्य सम्मानों जैसे कर्नाटक सरकार का बसवाश्री पुरस्कार, भारत कृषक रत्न पुरस्कार और गोपाल गौरव पुरस्कार से नवाजा गया है।

हिमाचल प्रदेश, आपके मार्गदर्शन में इस खेती विधि को आगे बढ़ाने की दिशा में अग्रसर है।

मुद्रक – दत्ता ग्राफिक्स, सोलन (हि.प्र.)

चित्रांकन – दिनेश अत्री, शिमला (हि.प्र.) 98172–74532